साहित्य संहिता
Available at http://sahityasamhita.org/
ISSN 2454-2695
Volume 01 Issue 07
August 2015

आतंकवाद – बस अब और नहीं

ऋचा अग्रवाल

भडकती है इंतकाम की चिंगारी जब– जब

फैलती है आतंकवाद की आग तब – तब ।

आतंकवाद है सबूत हैवानियत का,

बुझा दिया है इसने दीपक इंसानियत का।।

कहते हैं कि यदि शरीर में कोई फुन्सी हो जाए तो दवा लगाकर उसका ईलाज किया जा सकता है, पर अगर यही फुन्सी फोड का आकार लेने लगे तो उसका उपचार केवल आपरेशन द्वारा ही संभव है। आज आतंकवाद भी भयावह और दर्दनाक फोडे का रूप धारण कर चुका है। और हम कभी इंतकाम के नाम पर, तो कभी धर्म के नाम पर होने वाले इस जेहाद को चुपचाप बर्दाश्त नही कर सकत । इस आतंकवाद रूपी फोडे का उपचार केवल युद्व रूपी मेजर आपरेशन ही है और कुछ नही।

आतंकवाद क्या है– किसी भी देश में आतंक की स्थिति उत्पन्न करना अर्थात् निर्दोषों की हत्या, भीड़–भाड वाले इलाकों में बम फेकना, अंधाधुध गोलियां चलाकर उनके मन में भय पैदा करना । आतंकवादी संगठन छोटे एवं क्रूर होते ह। उनका मुख्य उद्देश्य हिंसा के द्वारा अपनी बात मनवाना होता है। वे लोगों के विचारों पर अपनी दहशत की छाप छोडने और उनके द्वारा सरकार को झुकाने का प्रयत्न करते हैं। हिंसा के द्वारा ही वह मानसिक भय पैदा करते है तथा इसी से चाहते है सामाजिक, सांस्कृतिक और राजनीतिक परिवर्तन।

कुछ लोगों का मानना है कि हमें इस भयावह हिंसा और खून – खराबे का जवाब फकत दोस्ती का हाथ बढ़ा कर देना चाहिए। मान भी लें कि ये सोच सही है। हमने ऐसा किया भी पर जवाब में क्या मिला– अभी हाल ही में पंजाब के गुरूदासपुर में हुए हमले, कश्मीर में दिन–रात चलने वाली गोलियां, कंधार विमान अपहरण, ताज से उठने वाली आग की लपटें जिसमें न जाने कितने ही मासूमों की जाने चली गई, कितनों के सपने उस लपटों

ISSN 2454-2695
Volume 01 Issue 07
August 2015

में धूं–धूं कर जल गए। अरे आज वो जमाना नहीं रहा कि महात्मा गांधी के अंहिसा के सिद्वान्तों पर चलकर एक गाल पर थप्पड खाकर दूसरा भो आगे कर दें। आज का जमाना है ईंट का जवाब पत्थर से देने का।

पर इन सबसे मेरा यह अभिप्राय बिल्कुल नहीं है कि शांतिप्रिय होना गलत है। किसी भी समस्या को सुलझाने का सबसे कारगर उपाय है उस के विभिन्न मुद्दों पर वार्तालाप करना, उस समस्या को खत्म करने के लिए प्रयत्नशील होना।

पर इतिहास साक्षी है कि जब भी हमारी ओर से ऐसी कोशिश हुई उसे हमारी कमजोरी समझा गया और बार–बार हमारे साथ विश्वासघात किया गया।

यहां पर मुझे महाभारत काल की कुछ पक्तियाँ याद आ रही है

क्षमा, दया, तप, त्याग, मनोबल

सबका लिया सहारा।

पर नर व्याग्र दुर्योधन तुमसे,

कहो कहां कब हारा।।

यहाँ विचार करने योग्य बात यह है कि जब दुर्योधन पाण्डवों को कुल पांच गांव तक देने के लिए तैयार नहीं हुआ, तो आज के क्रूर आतंकवादो जिनके लिए मासूमों का खून बहाना ही उनका धर्म और उनकी मोक्ष प्राप्ति का साधन है क्या शांति प्रस्ताव भेजने से हमारे सामने हथियार डाल देंगे और हमें आतंकवाद से छुटकारा मिल जाएगा। नही कदापि नही।

आज लिट्टे और अलकायदा जैसे आतंकवादी संगठन ज्यादा से ज्यादा नाभिकीय, जैविक तथा रासयनिक हथियारों के साथ तैयार है। और हमें समय–2 पर मुंबई ताज हमले जैसी धमकियां दे रहे है। उनका ये काम और भी आसान कर दिया है नाभिकीय अस्त्रों, उनकी तकनीक और वैज्ञानिकों तक की खरीद फरोख्त ने।

ISSN 2454-2695
Volume 01 Issue 07
August 2015

पर अगर हम अतीत के पन्नों को पलटे तो ये जग जाहिर है कि हमने आतंकवाद के सामने कभी सर नहीं झुकाया अपितु डटकर मुकाबला किया है। आतंकवाद का अन्तराष्ट्रीय रूप 90 के दशक में सामने आया जब लिट्टे ने हमला कर श्रीलंका पर अपना कब्जा कर लिया। तब राजीव गांधी जी ने जो कि उस समय भारत के प्रधानमंत्रो थे, वहां अपनी सैनिक बल भेजकर आतंकवादियों को खदेड दिया और लोकतंत्र की स्थापना की।

यहां मै अमेरिका के उस कदम की भी सराहना करना चाहूंगी जब उसने वर्ल्ड ट्रेड सेन्टर और पेन्टागन पर हुए हमलों के बाद लादेन को पकडने के लिए तालिबान पर बम हमले किए जिसके परिणामस्वरूप तालिबान सरकार की सत्ता चली गयी और वहां हामिद करजाई के नेतृत्व में लोकतंत्र स्थापित हुआ। पर इसका मतलब यह नहीं है कि अमेरिका आतंकवाद की लडाई में हमारा हितैशी है। मुम्बई हमलों के तुरन्त बाद पाकिस्तानी सता प्रतिष्ठान से आ रहे बयान कि अब मुम्बई हमलों के सिलसिले में वह केस दायर करेगी, आश्चर्यजनक है। अफगानिस्तान– पाकिस्तान मामले पर अमेरिकी राष्ट्रपति बराक ओबामा के विशेष दूत रिचर्ड होलब्रुक की पहली पाकिस्तानी यात्रा के दौरान अगर पाक सरकार ऐसा बयान जारी करती है तो यह संभवतः भारत के साथ–2 अमेरिका को भी एक संदेश देने के लिए है। इन सब तथ्यों को जोड कर देखने से एक संकेत स्पष्ट होता है कि आतंकवाद के खिलाफ लडाई में अमेरिका की भूमिका संदेहात्मक है क्योंकि सारे तथ्यों के जानने और समझने के बावजूद भी अमेरिका ने पाक को वितीय सहायता देनी बंद नही करी है। जो वित्तीय सहायता पाक को आंतकवाद के खिलाफ लडाई जारी रखने के लिए दी जाती है। पाकिस्तान उन्ही पैसों से दुनिया की तबाही का सामान तैयार करता है। वहां जानलेवा हथियार कोडियों के भाव बेचे और खरीदे जाते ह।

जाहिर है पाक्स्तिान में तमाम किस्म की ताकते है जिनके अलग–अलग हित है। ऐसे में ये जरूरी है कि भारत का एक स्वर हो। यहां के नेता चुनावों की राजनीति छोडकर युद्व की रणनीतियां तैयार करे। अगर हमे आतंकवाद के खिलाफ लडाई लडनी है तो अपनी ताकत, नई तकनीकों और मजबूत हौसलों के साथ मैदान म उतरना ही पडेगा। वरना ना जाने कितने और आंतकवादी हमारी इस पुण्य भूमि को रक्त रंजित करेंगें।

ISSN 2454-2695
Volume 01 Issue 07
August 2015

अंत में मैं अपने विचारो का इस पंक्तियों के साथ विराम देना चाहूंगी–

जिंदगी है हवन तो नमन चाहिए

जीतना है समर तो लगन चाहिए

शब्दों की बंदिशे ही नही है फकत

आंसुओ भरे दो नयन चाहिए

कोई दौलत नहीं कोई जन्नत नहीं

मुस्कुराते हुए चमन का वतन चाहिए

और अगर सीधी अंगुली से घी न निकले तो अंगुली टेढी कर लो

वक्त का तकाजा कहता है, बहुत हो चुकी बाते और फरियादें

आतंकवाद क खिलाफ अब तो युद्व होना चाहिए

अब तो युद्व होना चाहिए।